समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

प्रबंध संपादिका :

डॉ. रोहिणी शिवकालन

संस्थापक : प्रधान संपादक :

डॉ. देवेश ठाकुर

संपादक :

डॉ. सतीश पांडेय

सहायक-संपादक :

डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट

संपादकीय-संपर्क :

बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा,
घाटकोपर (पश्चिम), मुंबई-400 084
टेलिफोन : 25161446
Email : sameecheen@gmail.com

विशेष :

'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

परीक्षक विद्वत मंडल : (Peer Review Team)

1) **प्रोफेसर ताकेशी फुजिई**
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
टोक्यो यूनिवर्सिटी फॉर फॉरेन स्टडीज, टोक्यो।
2) **प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र चौबे**
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली।
3) **प्रो. (डॉ.) वशिष्ठ अनूप**
हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय,
वाराणसी, (उत्तर प्रदेश)
4) **डॉ. नरेन्द्र मिश्र**
हिन्दी विभाग
जयनारायण व्यास, विश्वविद्यालय
जोधपुर।
5) **प्रो. (डॉ.) करुणाशंकर उपाध्याय**
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई।
6) **डॉ. अनिल सिंह**
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल,
मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई।
7) **प्रो. (डॉ.) सदानंद भोसले**
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे।
8) **प्रो. (डॉ.) शरेशचंद्र चुलकीमठ**
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़।
9) **डॉ. अरुणा दुबलिश**
पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.), मुंबई-400086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

संपादक : **सतीश पांडेय**

वर्ष-13, मूल्य - 50 रुपए अंक-24, पृष्ठांक-88

सहयोग : एक प्रति रु. 50 /-, वार्षिक रु.100/-, पंच वार्षिक रु.500/-, आजीवन सदस्यता रु. 5000/-

इस अंक में | पृष्ठ

अपने तईं- 05

व्यक्ति-परिचय : वीरेन डंगवाल 07

मानी पैदा करता जीवन : मंगलेश डबराल 09

करवट लेता अतीत : रीता डंगवाल 18

नहीं तुम कहीं नहीं गए : वीरेन : डॉ. देवेंद्र मेवाड़ी 21

शुरू और खत्म होती जिंदगी के बीच : डॉ. लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'बटरोही' 35

प्यारे वीरेन दद्दू की याद : संजय जोशी 42

तुम्हारी आमदरफ्त के निशान बहुत गहरे हैं : सुधीर विद्यार्थी 47

शीतल जल का सोता और दीवान-ए-मीर : वीरेन डंगवाल : अशोक पांडे 58

"मैं तो सतत रहूंगा तुम्हारे भीतर नमी बनकर, जिसके
स्पर्श मात्र से जाग उठा है जीवन मिट्टी में : हरि मृदुल 64

मेरा प्रिय कवि वीरेन डंगवाल : सुंदर चंद ठाकुर 73

कहाँ तक जा पहुँचे हत्यारे हाथ : डॉ. विजय कुमार 75

उजाले दिन जरूर आवेंगे : वीरेन डंगवाल : प्रो. वशिष्ठ अनूप 80

मानवीय प्रेम, प्रतिबद्धता और प्रतिरोध का कवि
वीरेन डंगवाल : डॉ. सतीश पांडेय 85

अपने समय से मुठभेड़ करने वाले जीवंत कवि : वीरेन डंगवाल : हृदयेश मयंक 94

अपने समय से रूबरू कराती कविताएँ : दुश्चक्र में स्रष्टा : डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय 98

प्रतिरोध एवं संघर्ष के कवि: वीरेन डंगवाल : डॉ. ममता पंत 103

वीरेन डंगवाल-साधारण जीवन के असाधारण कवि : डॉ. गौरी त्रिपाठी 113

सहज और सजग अभिव्यक्ति : 'इसी दुनिया में': डॉ. रीता दास राम 120

वीरेन डंगवाल की कविता : पहाड़ और वहाँ की
स्थानीयता : डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट 124

वीरेन डंगवाल की कविताओं में समसामयिक बोध : डॉ. गीता संतोष [illegible] 133

जनपक्षधर कवि वीरेन डंगवाल : डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे 135

'स्याही ताल' में भी उम्मीद के कवि : वीरेन डंगवाल : ज्योत्सना राम 141

सघन संवेदना का कवि : वीरेन डंगवाल : अनन्त द्विवेदी 146

सामाजिक पक्षधरता का प्रश्न और वीरेन डंगवाल की
कविता : डॉ. अनिल कुमार सिंह 150

वीरेन डंगवाल–साधारण जीवन के असाधारण कवि

डॉ. गौरी त्रिपाठी

हमने यह कैसा समाज रच डाला है
इसमें जो चमक रहा शर्तिया काला है।

इन दोनों पंक्तियों से ही वीरेन डंगवाल की कविता की बनावट और बुनावट को समझा जा सकता है कि वे किस कदर अपने समय और समाज के प्रति प्रतिबद्ध थे। समाज की विसंगतियाँ उन्हें उद्वेलित करती थीं और वे उसे बगैर कविता में लिखें संतुष्ट नहीं हो पाते थे। एक सच्चा कवि शायद यही होता है, जो अपने समय के सच को अपनी कविताओं में उतार देता है।

वीरेन डंगवाल समकालीन हिंदी कविता के एक महत्वपूर्ण कवि हैं जो अपने ही समय में समकालीन कविता के ढाँचे को तोड़ने की कोशिश करते हैं और जिसके परिणाम स्वरूप हमें उनकी कविताओं में अलग-अलग रंग देखने को मिलते हैं।

वे प्रचलित विषय वस्तु को बदल देते हैं और कभी-कभी कविता के शिल्प को अराजक होने की स्थिति तक इस्तेमाल करते हैं शायद हिंदी के वह अनोखे ऐसे कवि हैं जो कविता में कई देशज शब्दों को इस्तेमाल करते हैं।

वीरेन डंगवाल ने नए-नए शब्द गढ़े हैं और पुराने शब्दों को भी नए शब्द की तरह इस्तेमाल किया है। अगर देखा जाए तो इससे हिंदी कविता की रूढ़ियाँ बहुत हद तक टूटी हैं।

'बहरहाल वीरेन की कविता का एक छोर वह है जिसमें यान्नी के अलावा कंप्यूटर कक्ष की वातानुकूलित स्वच्छता में रखी हुई नक्शेबाज मशीन भी है। दरवाजे पर कांच लगाए जगमग-जगमग ज्योतिकरी के माहौल में भगवान बने बैठे हैं। कंप्यूटर और कंप्यूटरी दूसरे छोर पर भाप के इंजन को याद करती, नींबू को सलाम करती, पोस्ट कार्डों की महिमा गाती अधेड़ नैनीताल की उधेड़बुन में उलझती, फूलों से भरी हुई, फरवरी का घुटनों चलती बेटी की तरह स्वागत करती और हाथी, ऊँट, गाय, सूअर के बच्चे, गौरैया, मक्खी जैसे जीव जंतुओं और पपीते, समोसे, इमली जैसे खाद्य पदार्थों का एक अनिवार्य विमर्श बनती कविताएँ है।'[1]

ये सारी कविताएँ दरअसल मनुष्य जीवन को और विस्तार देती हैं, जीवन के छोटे-छोटे अनुभव और संवेदनाओं को जिन्हें हम अक्सर भूले रहते हैं, ये कविताएँ सहसा हमें याद दिला देती हैं। वे बार-बार अपनी कविता में मामूली लोग और मामूली चीजों की वकालत करते हैं। उनका मानना है कि मामूली लोग और मामूली चीजें दरअसल उसी तरह हैं जिस तरह वे अपने स्वाभाविक रूप में रहती हैं और उनके जीवन के अपने अर्थ